साभार: टी. ए. वी. शर्मा

बाएं: केंद्रीय विद्यालय, तिरुमालागिरि, आंध्र प्रदेश के एक्सचेंज शिक्षक टी. ए. वी. शर्मा न्यू हैम्पशायर के कैम्पबेल हाई स्कूल के विद्यार्थियों को भौतिक विज्ञान पढ़ाते हुए।

नीचे: ह्यूस्टन, टेक्सस के बेलएयर हाई स्कूल के एक्सचेंज शिक्षक टिमोथी डोपांटे नई दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय नंबर तीन में भौतिक प्रयोगशाला में विज्ञान के छात्रों के साथ।

अमेरिका-भारत शिक्षकों का आदान-प्रदान

गिरिराज अग्रवाल

गिरिराज अग्रवाल

विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए वैकल्पिक घर जैसा अपना खुद का क्लासरूम जहां कंप्यूटर या लैपटॉप, प्रिंटर, माइक्रोवेव ओवन, रेफ्रिजरेटर, संगीत सिस्टम और कभी-कभी सोफ़ा भी रहता है, जहां वे अपनी पसंद के मुताबिक चीज़ें सजा सकें: फ़ुलब्राइट एक्सचेंज कार्यक्रम के तहत अमेरिका गए भारत के स्कूली शिक्षकों ने पाया कि वे एक बिल्कुल नए और अलग सिस्टम से रूबरू हैं जहां शिक्षकों के साथ ही छात्रों को भी पढ़ाने के तरीकों से लेकर मनचाही पोशाक पहनकर स्कूल आने तक, पसंदीदा चुनाव की पूरी आज़ादी है।

भारतीय शिक्षकों के अमेरिकी अनुभव के साथ ही अमेरिकी शिक्षकों ने भी भारत में अनोखे अनुभव हासिल किए- उन्होंने चाक और बोर्ड के जरिये छात्रों को उन कक्षाओं में पढ़ाया जहां आम अमेरिकी क्लासरूम की अपेक्षा दो गुने से भी ज़्यादा छात्र मौजूद थे।

गणित, विज्ञान और अंग्रेजी के आठ भारतीय और आठ अमेरिकी शिक्षकों ने अगस्त से दिसंबर 2007 तक चले फ़ुलब्राइट शिक्षक आदान-प्रदान कार्यक्रम में भागीदारी की। युनाइटेड स्टेट्स एजुकेशनल फ़ाउंडेशन इन इंडिया यानी यूसेफ़ी द्वारा संचालित इस कार्यक्रम को तीन साल पूरे हो चुके हैं। यह कार्यक्रम माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों को एक-दूसरे के अनुभव और संस्कृति से सीखने का अवसर प्रदान करता है।

नई दिल्ली में यूसेफी की कार्यकारी निदेशक जेन ई. शुकॉस्के कहती हैं, ''यह वास्तव में किसी और की भूमिका को अपनाना है। शिक्षकों की हर जोड़ी असल में एक सेमेस्टर के लिए अपना क्लासरूम और शैक्षिक कार्य की अदला-बदली करती है।''

भारतीय शिक्षक अमेरिकी स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं से बेहद प्रभावित हुए और वहां इस्तेमाल की जा रही विभिन्न तकनीकों को उन्होंने लाभकारी पाया। उदाहरण के लिए, अमेरिका में छात्र एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हैं जिससे कि उन्हें नींद न आएं और शिक्षक भी क्लासरूम में अपनी शैक्षिक सामग्री और उपकरणों को अपने हिसाब से सजा सकें। चेन्नई स्थित पद्म शेषाद्रि बाल भवन सीनियर सैकेंडरी स्कूल में गणित की शिक्षक रंजिनी गोपालकृष्णन कहती हैं, ''अमेरिका में स्कूली शिक्षकों को हर कालांश के बाद अपना क्लासरूम बदलना नहीं पड़ता और उनमें ओवरहैड प्रोजेक्टर जैसे आधुनिक शैक्षिक उपकरण और मल्टीमीडिया तकनीक उपलब्ध होती है। इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि शिक्षक थके नहीं। वे अपने हिसाब से क्लासरूम को व्यवस्थित भी कर सकते हैं।'' उन्होंने पिछले सेमेस्टर में उत्तरी कैलिफ़ोर्निया के सैन लॉरेंज़ो कस्बे के सैन लोरेंज़ो हाई स्कूल में शिक्षक के रूप में काम किया।

सभार: शशि राज

नीचे: डेबी हस्टन (बाएं) अपनी भारतीय सहयोगी और चेन्नई के हिंदू सीनियर सैकेंडरी स्कूल से आईं एक्सचेंज शिक्षिका शीला गैब्रिएल के घर पर आयोजित रात्रिभोज के अवसर पर भारतीय भोजन परोसने में मदद करती हुईं। दोनों ही पोर्टलैंड हाई स्कूल, मेन में पढ़ा रही थीं।

नीचे: गैब्रिएल स्कीइंग करते हुए।

सभार: शीला गैब्रिएल

ऊपर: एयर फ़ोर्स स्टेशन, पुणे के केंद्रीय विद्यालय के अंग्रेजी शिक्षक शशि राज हंटिंग्टन, मेसाच्यूसेट्स के गेटवे रीजनल हाई स्कूल में छात्रों से सवाल पूछते हुए।

दाएं: बेंगलूर के केंद्रीय विद्यालय की गणित की शिक्षिका रमा बालाजी अल पोर्टल के योसेमाइट पार्क हाई स्कूल की एक छात्रा को एक सवाल का हल बताती हुईं।

सभार: रमा बालाजी

सभार: शीला गैब्रिएल

एयर फ़ोर्स स्टेशन, पुणे के केंद्रीय विद्यालय में शिक्षक शशि राज भी हंटिंग्टन, मैसाच्यूसेट्स के गेटवे रीजनल हाई स्कूल में आधुनिक प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को देखकर बेहद प्रभावित हुए। राज के अनुसार, ''मैं जिस अमेरिकी स्कूल में पढ़ाता था, वहां हर क्लासरूम में छात्रों के लिए 10 लैपटॉप थे जिन पर वे अपने प्रोजेक्ट करते थे या निबंध लिखते थे।''

भारत आए अमेरिकी शिक्षकों ने पाया कि ज़्यादातर भारतीय छात्रों में सीखने की उत्सुकता है लेकिन कक्षा में ज़्यादा छात्रों का होना पढ़ाना मुश्किल बना देता है। बेलएयर हाई स्कूल, ह्यूस्टन, टेक्सस के भौतिक विज्ञान के शिक्षक टिमोथी डापोंटे कहते हैं, ''भारत में औसतन एक कक्षा में 50 छात्र होते हैं और शिक्षक छात्रों पर वैयक्तिक ध्यान नहीं दे सकता जिसकी उन्हें ज़रूरत है और जो उन्हें मिलना चाहिए।'' डापोंटे ने नई दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय नम्बर तीन में शिक्षण कार्य किया।

अमेरिकी शिक्षक एडी पी. ग्रैनिस भारत में चाक और बोर्ड के जरिये पढ़ाई को धीमा तरीका बताते हैं। ग्रैनिस कहते हैं, ''अमेरिकी स्कूलों में पढ़ाई का लेक्चर तरीका नहीं चलता। शिक्षण कार्य प्रयोगों पर ज़्यादा आधारित है। भारत में ज़्यादा ध्यान सिलेबस और परीक्षाओं पर रहता है। लेकिन अब दोनों ही सिस्टम एक-दूसरे की ओर झुक रहे हैं।'' वह जॉन ओ कोनेल हाई स्कूल, सैन फ्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया में शिक्षक हैं। उन्होंने अहमदाबाद, गुजरात के एकलव्य हाई स्कूल में जीव विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान विषय पढ़ाए।

हंटिंग्टन, मैसाच्यूसेट्स के गेटवे रीजनल हाई स्कूल के शिक्षक रॉडनी क्लेबर भी कुछ इसी तरह की राय जाहिर करते हैं। उन्हें पुणे के केंद्रीय विद्यालय में अंग्रेजी एक्सचेंज शिक्षक के रूप में पढ़ाने का मौका मिला। क्लेबर को थोड़े समय में ही सैकड़ों उत्तर पुस्तिकाएं जांचनी पड़ीं। अमेरिका में उन्हें इस काम के लिए कोई सहायक मिलता, कोई स्वयंसेवी मिलता या ज़्यादा समय मिलता या फिर कम उत्तर पुस्तिकाएं जांचने को दी जाती। वह कहते हैं, ''मैंने ये उत्तर पुस्तिकाएं एक सम्मेलन में भाषण सुनते हुए जांचीं।''

इस तरह की घटनाओं ने सेमेस्टर का आखिर समय आने के साथ ही अमेरिकी शिक्षकों को अपने भारतीय साथियों के प्रति श्रद्धा से भर दिया। सैन लोरेंज़ो, कैलिफ़ोर्निया के सैन लोरेंज़ो हाई स्कूल के गणित के शिक्षक अशांति ब्रांच कहते हैं, ''मुझे ऐसा महसूस होता है कि जब से मैं आया हूं, मैंने आराम नहीं किया है। मैं इस बात की प्रशंसा करता हूं कि भारतीय शिक्षक किस तरह पढ़ाने के साथ ही, उत्तर पुस्किाएं भी जांच लेते हैं, प्रयोगशालाओं का काम भी निपटा लेते हैं, रिपोर्ट कार्ड तैयार कर देते हैं, छात्रों के असंतोष की समस्या का समाधान करते हैं और इस सबके बावजूद अपने घर का ध्यान रखते हैं और खाना बनाने तथा सफाई करने का काम भी करते हैं।'' ब्रांच चेन्नई के पद्म शेषाद्रि बाल भवन सीनियर सैकेंडरी स्कूल में एक्सचेंज शिक्षक के रूप में भारत आए थे।

अमेरिकी शिक्षिका एरिन बेथ मैक्ग्रा ने हैदराबाद, आंध्र प्रदेश के केंद्रीय विद्यालय में एक्सचेंज शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य किया। वह कहती हैं कि भारतीय शिक्षकों को अक्सर प्रशासनिक कार्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन जैसे गैर शिक्षण कार्यक्रमों का जिम्मा सौंप दिया जाता है। उनके अनुसार इससे शिक्षकों के प्राफ़ेशनल काम में बाधा पड़ती है, जबकि अमेरिका में शिक्षकों को दिए जा

ज़्यादा जानकारी के लिए:

फ़ुलब्राइट शिक्षक एक्सचेंज कार्यक्रम

http://www.fulbright-india.org/Scripts/ForU.SNationalsTeachersTeachersExchange.aspx

इंटरनेट पर अंतरराष्ट्रीय गठजोड़ के लिए शिक्षक गाइड

http://www.ed.gov/teachers/how/tech/international/index.html

सकने वाले कार्य को लेकर सख्त नियम हैं। रटलैंड, वर्मोंट में रटलैंड हाई स्कूल में अंग्रेजी शिक्षक मैक्ग्रा कहती हैं, ''भारतीय शिक्षकों को इन अतिरिक्त कार्यों के लिए पैसा भी नहीं दिया जाता।''

कुलमिलाकर शिक्षकों ने अदला-बदली के इस कार्यक्रम के अनुभव से क्या सीखा? चेन्नई के हिंदू सीनियर सैंकेंडरी स्कूल की की शिक्षिका शीला गैब्रिएल कहती हैं, ''अमेरिका में शिक्षण कार्य परीक्षाओं और तथ्यों को रटने पर निर्भर नहीं है। बल्कि यह रचनात्मकता विकसित करने और छात्रों के नए नज़रिये से सोचने को प्रोत्साहित करने तथा उनमें विश्लेषण की प्रवृत्ति के विकास पर जोर देता है। मैं अपनी कक्षा में इन्हीं गुणों का समावेश करना चाहूंगी।'' उन्होंने पोर्टलैंड, मेन के पोर्टलैंड हाई स्कूल में शिक्षण कार्य किया। उन्हें छात्रों के स्पष्ट विचार अच्छे लगे। वह कहती हैं, ''उनकी स्वतंत्र सोच, स्पष्टवादिता और विश्वास ऐसी चीजें हैं जिनका भारतीय छात्रों में अभाव दिखता है।''

चेन्नई के एक स्कूल में एक्सचेंज शिक्षक के रूप में काम करने वाले अशांति ब्रांच को भारत में छात्रों के पूरी साल एकसाथ एक ही कक्षा में रहने का विचार अच्छा लगा। वह कहते हैं, ''हालांकि वे अन्य छात्रों से कम मिल पाते हैं लेकिन कक्षा में विश्वास और सामुदायिक भावना के विकास में मदद मिलती है। मुझे छात्रों में सीखने की लगन देखकर भी अच्छा लगा। जब मैं स्वयंसेवियों के लिए आग्रह करता हूं तो मुझे छात्रों से झगड़ना पड़ता है क्योंकि बहुत से छात्र स्वयंसेवी बनने को तैयार रहते हैं।''

साभार: अशांति ब्रांच

साभार: एरिन बेथ मैक्ग्रा

साभार: रॉडनी क्लेबर

सबसे ऊपर बाएं: कैलफ़ोर्निया के सैन लोरेंज़ो हाई स्कूल के गणित के शिक्षक अशांति ब्रांच चेन्नई में पद्म शेषाद्रि बाल भवन सीनियर सैंकेंडरी स्कूल में अपने विद्यार्थियों के साथ।

सबसे ऊपर दाएं: हैदराबाद में रक्षा धातु अनुसंधान प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. जी. मालाकोंदैया (बाएं) हैदराबाद में केंद्रीय विद्यालय कंचनबाग के वार्षिक खेल दिवस पर रटलैंड हाई स्कूल, वर्मोंट की अमेरिकी एक्सचेंज शिक्षिका एरिन बेथ मैक्ग्रा को तेलुगू गाने पर नृत्य करने के लिए एक ट्राफी देते हुए।

ऊपर: हंटिंग्टन, मेसाच्यूसेट्स के गेटवे रीजनल हाई स्कूल के अंग्रेजी शिक्षक रॉडनी क्लेबर एयर फ़ोर्स स्टेशन, पुणे के केंद्रीय विद्यालय के छात्रों के साथ।

शिक्षकों ने क्लासरूम के बाहर भी अच्छे अनुभव हासिल किए। भारतीय शिक्षक शीला ग्रैब्रिएल ने *भारत: विविधता में एकता* विषय पर अपने एक्सचेंज स्कूल के छात्रों और शिक्षकों के लिए पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। वह कहती हैं, ''पृष्ठभूमि में भारतीय संगीत बज रहा था। हमने पूरे कार्यक्रम को भारतीय स्वरूप देने के लिए एक भारतीय रेस्तरां से पकोड़े, पापड़ और कई तरह की चटनी मंगाई।'' उन्होंने अपने एक्सचेंज स्कूल में अंतरराष्ट्रीय कुकिंग की कक्षा में भारतीय कुकिंग के बारे में भी बताया।

कुछ भारतीय शिक्षकों ने पहली बार बर्फ गिरते देखी। जब शिक्षक शशि राज ने सफेद कणों को गिरते देखा तो उन्हें सोचा कि वे पास के पेड़ों से गिर रहे हैं। तब उनके कुछ छात्रों ने उन्हें बताया, ''मिस्टर राज ये हिम मणिभ हैं।'' राज कहते हैं, ''मैं सुंदर हिम मणिभों को गिरते, वृक्षों को अपने रंग में रंगते, सदाबाहर चीड़ के वृक्षों को सफेद रंग में रंगते और पूरी प्रकृति को बिल्कुल सफेद रंग मे रंगते हुए देख रहा था।''

भारतीय शिक्षकों को अमेरिकी छात्रों द्वारा समाज सेवा के लिए धन एकत्र करना भी बहुत अच्छा लगा। राज कहते हैं, ''कुछ छात्र कारों पर पानी डाल रहे थे, जबकि कुछ अन्य उन्हें साफ कर रहे थे। वे पैसा एकत्र करने के लिए कुकीज और खाने की अन्य सामग्री भी बेच रहे थे।'' राज को उनके अमेरिकी परामर्श शिक्षक ही अपनी कार में स्कूल से घर और घर से स्कूल लाते थे। आधे घंटे के ड्राइव के दौरान वे शिक्षा प्रणाली, संस्कृतियों, भाषाओं और लोगों के बारे में बातचीत करते।

अमेरिकी शिक्षकों को भारत में कुछ अजीबोगरीब अनुभव भी हुए। नई दिल्ली में रिंग रोड पर एक हाथी को देखकर डापोंटे विश्वास नहीं कर पाए। अगस्त में गर्म मौसम के बावजूद वह स्थानीय बसों में सफर करते जिससे कि असली भारत को जान सकें। दीपावली का दिन उन्हें शोरशराबे और प्रदूषण बढ़ाने वाला लगा लेकिन उन्होंने इसे अपने मेजबान परिवार और बेटे मैथ्यू के साथ मनाया।

गैब्रिएल कहती हैं, ''फ़ुलब्राइट कार्यक्रम इतना गहन अनुभव है कि मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं वह व्यक्ति नहीं हूं जो छह माह पहले भारत छोड़ने के समय थी। मुझे पता है कि मुझे अपने भारतीय खोल में जाना है लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह खोल अब पहले जैसा होगा।'' एक और भारतीय शिक्षिका मिराज फ़ातिमा परवीन के दिल में वर्मोंट और उत्तरी-पूर्वी अमेरिका के ग्रीन माउंटेन्स की यादें बसी हैं। वह कहती हैं, ''मैंने प्रकृति की ऐसी खूबसूरती पहले कभी नहीं देखी। मुझे *गुड मॉर्निंग, हेलो, हाऊ आर यू टुडे, हैव ए नाइस डे* जैसे संबोधनों की याद आएगी जो मुझे यहां हर दिन सुनने को मिलते थे। वह अब कंचन बाग, हैदराबाद स्थित अपने केंद्रीय विद्यालय लौट गई हैं।

शुकॉस्के कहती हैं, ''एक्सचेंज कार्यक्रम माध्यमिक स्तर के स्कूल शिक्षकों को मेज़बान देश के बारे में जानने और इस अनुभव को अपने छात्रों, स्कूल और समुदाय के साथ बांटने का महत्वपूर्ण मौका उपलब्ध कराते हैं।'' अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में अब तक 38 शिक्षक भागीदारी कर चुके हैं। शुकॉस्के कहती हैं, ''यूसेफ़ी शिक्षक आदान-प्रदान कार्यक्रम के सकारात्मक प्रभाव से बहुत खुश है और भविष्य में हर साल आठ शैक्षणिक स्थानों पर एक्सचेंज के साथ इस कार्यक्रम को जारी रखने की योजना है।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।